महाविद्यालय स्तर पर अध्ययनरत् एन0ई0पी0 2020 के क्रियान्वयन के प्रभाव का अध्ययन

डॉ0 जितेन्द्र कुमार सिंह
सहायक प्रोफेसर
हिन्दू महाविद्यालय, मुरादाबाद।

जितेन्द्र कुमार
शोध छात्र
हिन्दू महाविद्यालय, मुरादाबाद।

सारांश

राष्ट्रीय शिक्षा नीति (एनईपी) 2020 उच्च शिक्षा प्रणाली को बदलने के उद्देश्य से एक व्यापक नीति है। इस अध्ययन का उद्देश्य नीति के कार्यान्वयन से पहले और बाद में चुनिंदा शैक्षणिक संस्थानों के तुलनात्मक विश्लेषण के माध्यम से भारत में उच्च शिक्षा पर एनईपी 2020 के प्रभाव की जांच करना है। अध्ययन शिक्षकों, छात्रों और प्रशासकों से डेटा इकट्ठा करने के लिए गुणात्मक और मात्रात्मक अनुसंधान विधियों दोनों को नियोजित करेगा। अध्ययन के निष्कर्ष उच्च शिक्षा क्षेत्र में बदलावों में अंतर्दृष्टि प्रदान करेंगे, जिसमें पाठ्यचर्या सुधार, शैक्षणिक दृष्टिकोण और संस्थागत शासन शामिल हैं। परिणाम नीति निर्माताओं और हितधारकों को एनईपी 2020 की प्रभावशीलता और सुधार की आवश्यकता वाले क्षेत्रों पर सूचित करने में मदद करेंगे। शोध से प्राप्त निष्कर्ष – महाविद्यालय स्तर पर अध्ययनरत् छात्रों एवं छात्राओं के एन0ई0पी0 2020 के क्रियान्वयन में सार्थक अन्तर नहीं पाया गया, महाविद्यालय स्तर पर अध्ययनरत् ग्रामीण एवं शहरी विद्यार्थियों के एन0ई0पी0 2020 के क्रियान्वयन में सार्थक अन्तर नहीं पाया गया।

मुख्य शब्द :– महाविद्यालय, एन0ई0पी0 2020, क्रियान्वयन

1.0 प्रस्तावना

1968 और 1986 की नई शिक्षा नीति (एनईपी) का लक्ष्य शैक्षिक अवसरों में निष्पक्षता को बढ़ावा देना था। वर्ष 1968 की छम्च् का उद्देश्य शिक्षा के ढाँचे में सुधार करना था, जबकि वर्ष 1986 की NEP ने शैक्षिक असमानताओं को मिटाने की आवश्यकता पर बल दिया था। इसके विपरीत, 2020 की नवीनतम राष्ट्रीय शिक्षा नीति शैक्षिक माध्यमों से समानता और समावेश को बढ़ावा देने के इर्द–गिर्द केंद्रित है. जुलाई 2020 में पेश की गई, यह नई नीति विशेष रूप से उच्च शिक्षा संस्थानों (भ्म्प्) के भीतर महत्वपूर्ण सुधारों की शुरुआत करती है। यह सार्वजनिक और निजी दोनों संस्थाओं के लिए एक संतुलित नियामक दृष्टिकोण की वकालत करता है और शिक्षा क्षेत्र में निजी परोपकारी जुड़ाव को सक्रिय रूप से प्रोत्साहित करता है। एनईपी 2020 ने भारत के शैक्षिक परिदृश्य को पुनर्जीवित करने के उद्देश्य से एक यात्रा शुरू की। भारतीय ज्ञान परंपराओं की बारीक समझ, गांधीजी के दृष्टिकोण और आत्मनिर्भर भारत (आत्मनिर्भर भारत) की समकालीन आकांक्षा के साथ डिजाइन की गई, यह नीति विविध लेकिन सामंजस्यपूर्ण सिद्धांतों की एक सिम्फनी को प्रतिध्वनित करती है। इसके दिल में, एनईपी–2020 एक समग्र शैक्षिक प्रतिमान का वादा करता है। इसके आलिंगन में, सैद्धांतिक ज्ञान व्यावहारिक अनुप्रयोग के साथ चलता है, और बहुभाषावाद समृद्ध सामाजिक मूल्यों के बीच खिलता है। परिवर्तनकारी विचार और कार्रवाई द्वारा चिह्नित युग की शुरुआत करते हुए, नई शिक्षा नीति (एनईपी) 2020 ने पिछले तीन वर्षों में उच्च शिक्षा के क्षेत्र में उल्लेखनीय नवाचार और पुनरोद्धार का एक आख्यान बुना है। पहलों की अधिकता बढ़ गई है, प्रत्येक पेंटिंग भारत के शैक्षिक परिदृश्य के विशाल कैनवास पर उपलब्धि के स्ट्रोक को चित्रित करती है।

एनईपी 2020 के क्रियान्वयन के प्रभाव का अध्ययन करने से हमें यह समझने में मदद मिल सकती है कि इस नई शिक्षा नीति का शिक्षा प्रणाली पर कैसा प्रभाव है। इसके माध्यम से, हम विद्यालय स्तर पर शिक्षा के गुणवत्ता, पाठ्यक्रम, और शिक्षकों की प्रशिक्षण के प्रति ध्यान केंद्रित कर सकते हैं। इससे

छात्रों की नौकरी के लिए तैयारी और उनके विचारों की स्थिरता में सुधार हो सकता है। इसके अलावा, यह अध्ययन हमें यह भी बता सकता है कि कैसे इस नई नीति को अमल में लाने में समस्याओं का सामना किया जा रहा है और उन्हें कैसे हल किया जा सकता है। एनईपी 2020 के क्रियान्वयन के प्रभाव का अध्ययन करना शिक्षा के क्षेत्र में सुधार को समझने में मदद कर सकता है और इसे बेहतर बनाने के लिए निर्णय लेने में सहायक हो सकता है।

2.0 अध्ययन की आवश्यकता एवं महत्व

नई शिक्षा नीति उच्च शिक्षा में छात्रों के लिए चुनौतियां और अवसर दोनों लेकर आई है। एक महत्वपूर्ण प्रभाव पाठ्यक्रम चयन में बढ़ा हुआ लचीलापन है। एक बहु–विषयक दृष्टिकोण के साथ, छात्रों को विभिन्न विषयों से विषयों को चुनने की स्वतंत्रता है, जिससे वे अपनी रुचियों का पता लगा सकें और एक व्यापक ज्ञान आधार विकसित कर सकें (गुप्ता और शर्मा, 2021)। यह लचीलापन छात्रों को अपने कैरियर आकांक्षाओं के आधार पर अपने सीखने के अनुभव को अनुकूलित करने की अनुमति देता है। इसके अलावा, अनुसंधान और नवाचार पर जोर छात्रों को अत्याधुनिक अनुसंधान परियोजनाओं में संलग्न होने के अवसर प्रदान करता है। अनुसंधान के लिए यह प्रदर्शन न केवल उनके अकादमिक ज्ञान को बढ़ाता है बल्कि उन्हें मूल्यवान शोध कौशल और गंभीर और विश्लेषणात्मक रूप से सोचने की क्षमता से भी लैस करता है (मिश्रा एवं अन्य, 2023)। छात्र नए ज्ञान के निर्माण में सक्रिय भागीदार बन जाते हैं और वास्तविक दुनिया की समस्याओं को हल करने में योगदान करते हैं। हालांकि, नई शिक्षा नीति भी चुनौतियों का सामना करती है, खासकर उन छात्रों के लिए जो पारंपरिक शिक्षण विधियों के आदी हैं। अधिक छात्र–केंद्रित और इंटरैक्टिव सीखने के माहौल में संक्रमण के लिए समायोजन अवधि की आवश्यकता हो सकती है (गुप्ता और शर्मा, 2021)। छात्रों को सहयोगी शिक्षण दृष्टिकोणों के अनुकूल होने, समूह परियोजनाओं में भाग लेने और अपने सीखने का स्वामित्व लेने की आवश्यकता है। ज्ञान के निष्क्रिय प्राप्तकर्ता से एक सक्रिय शिक्षार्थी के लिए यह बदलाव कुछ छात्रों के लिए

चुनौतीपूर्ण हो सकता है (राजपूत एट अल। हालांकि, शोध से पता चलता है कि सहयोगी शिक्षण महत्वपूर्ण सोच, समस्या को सुलझाने के कौशल और संचार क्षमताओं को बढ़ाता है (चौधरी एट अल। जो छात्र समूह परियोजनाओं और चर्चाओं में सक्रिय रूप से संलग्न होते हैं, वे विषय वस्तु की गहरी समझ हासिल करते हैं और महत्वपूर्ण टीमवर्क कौशल विकसित करते हैं। उच्च शिक्षा में व्यावसायिक शिक्षा और कौशल विकास के एकीकरण का छात्रों की रोजगार क्षमता पर महत्वपूर्ण प्रभाव पड़ता है। नई शिक्षा नीति का उद्देश्य इंटर्नशिप, अप्रेंटिसशिप और व्यावहारिक प्रशिक्षण को बढ़ावा देकर शिक्षा और उद्योग के बीच की खाई को पाटना है (कुमार एवं अन्य, 2021)। जिन छात्रों के पास ऐसे अवसरों तक पहुंच है, वे नौकरी के बाजार के लिए बेहतर तैयार हैं और रोजगार हासिल करने में एक फायदा है। हालाँकि, इन परिवर्तनों को लागू करने में चुनौतियाँ उत्पन्न होती हैं। संकाय सदस्यों को सहयोगी और अनुभवात्मक शिक्षा (शर्मा और वर्मा, 2019) का समर्थन करने के लिए अपनी शिक्षण पद्धतियों को अनुकूलित करने की आवश्यकता है। इसके लिए शिक्षकों के लिए अतिरिक्त प्रशिक्षण और व्यावसायिक विकास की आवश्यकता है ताकि छात्र–केंद्रित सीखने के वातावरण को प्रभावी ढंग से सुविधाजनक बनाया जा सके। इसके अतिरिक्त, नई शिक्षा नीति के कार्यान्वयन का समर्थन करने के लिए बुनियादी ढांचे का उन्नयन और संसाधन आवंटन महत्वपूर्ण है (सिन्हा एवं अन्य, 2022)।

एनईपी 2020 के क्रियान्वयन के प्रभाव के अध्ययन की आवश्यकता और महत्व कई पहलुओं से समझा जा सकता है। नीति के क्रियान्वयन के प्रभाव का अध्ययन करने से हम नीति के प्राथमिक उद्देश्यों के प्रति कितना सफलतापूर्वक पहुंचा है, यह निर्धारित कर सकते हैं। एनईपी 2020 के क्रियान्वयन के प्रभाव का अध्ययन करके हम शिक्षा प्रणाली में किए गए परिवर्तनों का मूल्यांकन कर सकते हैं, जिससे हम उसे और समृद्ध और प्रभावी बनाने के लिए सक्षम होते हैं। यह अध्ययन हमें समझने में मदद करता है कि नीति के प्रभाव सामाजिक और आर्थिक दृष्टिकोण से कैसे हैं। इसके माध्यम से, हम छात्रों के शैक्षिक प्रदर्शन, समर्थन, और प्रतिस्पर्धा की स्थिति को मूल्यांकित कर सकते हैं। अध्ययन विशेष रूप से नीति के

विभिन्न पहलुओं के प्रभाव का विश्लेषण कर सकता है, जैसे कि पाठ्यक्रम, शैक्षणिक तकनीकी, और शिक्षकों की प्रशिक्षण के प्रति। इन सभी कारणों से, एनईपी 2020 के क्रियान्वयन के प्रभाव का अध्ययन महत्वपूर्ण है ताकि हम शिक्षा प्रणाली में सुधार के लिए सही निर्णय ले सकें।

3.0 सम्बन्धित शोध साहित्य का अध्ययन

प्रेम परिहार (2020), पाठक (2021), बिरेंद्र सिंह एवं कुकन देवी (2022) आदि सम्बन्धित शोध हुये हैं।

4.0 समस्या कथन

महाविद्यालय स्तर पर अध्ययनरत् एन0ई0पी0 2020 के क्रियान्वयन के प्रभाव का अध्ययन

5.0 चरों का परिभाषीकरण

- **महाविद्यालय :–** महाविद्यालय किसी उच्च शिक्षा संस्थान को कहा जाता है जहाँ प्रमाण पत्र, उच्च शिक्षा की डिग्री और अन्य उच्च शिक्षा संबंधित पाठ्यक्रमों की पढ़ाई की जाती है। ये सामान्यतः कॉलेज और विश्वविद्यालयों को संदर्भित करते हैं। यहां छात्र अपने व्यक्तिगत और व्यावसायिक लक्ष्यों को पूरा करने के लिए विभिन्न कोर्सों में पढ़ाई करते हैं और अध्ययन करते हैं।
- **एन0ई0पी0 2020 :–** एनईपी 2020 (नेशनल एजुकेशन पॉलिसी 2020) भारतीय शिक्षा नीति का एक महत्वपूर्ण परिवर्तन है जो भारतीय शिक्षा प्रणाली को सुधारने और मोटीवेट करने का उद्देश्य रखता है। इस नीति में शिक्षा के कई क्षेत्रों में सुधार के लिए नई दिशानिर्देश और कदम हैं। कुछ मुख्य प्रमुख उद्देश्यों में शिक्षा के प्रति पहुंच का विस्तार, शिक्षा में अनुप्रयोगिता का प्रोत्साहन, अनुप्रयोगिता के माध्यम से शिक्षा के स्तर को बढ़ाना, और न्यूनतम शिक्षा योग्यता को समान रूप से पहुंचने की दिशा में परिवर्तन शामिल हैं। इस नीति

का उद्देश्य है एक समृद्ध, समानतापूर्ण, और सबल भारतीय समाज का निर्माण करना जिसमें शिक्षा एक महत्वपूर्ण योगदान देती है।

- **क्रियान्वयन :–** क्रियान्वयन शब्द का अर्थ है किसी नीति, योजना या विचार को क्रियान्वित करना, अर्थात् उसे वास्तविकता में लाना या उसे कार्यान्वित करना। जब हम किसी नीति, योजना या नए विचार को अमल में लाते हैं और उन्हें कार्यान्वित करते हैं, तो हम उनके क्रियान्वयन का हिस्सा बन जाते हैं। किसी नीति या योजना के क्रियान्वयन से हमें यह समझ मिलता है कि कैसे उसके प्रावधानों को वास्तविकता में लाया जा रहा है और उसका कितना प्रभाव हो रहा है। यह भी हमें दिखाता है कि कैसे उस नीति या योजना को लागू किया जा रहा है, क्या समस्याएँ आ रही हैं, और क्या सुधार की आवश्यकता है। इसके माध्यम से, हम नीति या योजना की कार्यान्विति को मूल्यांकन कर सकते हैं और उसे और प्रभावी बनाने के लिए आवश्यक कदम उठा सकते हैं।

6.0 अध्ययन के उद्देश्य

1. महाविद्यालय स्तर पर अध्ययनरत् छात्रों एवं छात्राओं के एन0ई0पी0 2020 के क्रियान्वयन का तुलनात्मक अध्ययन।
2. महाविद्यालय स्तर पर अध्ययनरत् ग्रामीण एवं शहरी विद्यार्थियों के एन0ई0पी0 2020 के क्रियान्वयन का तुलनात्मक अध्ययन।

7.0अध्ययन की परिकल्पनाऐं

1. महाविद्यालय स्तर पर अध्ययनरत् छात्रों एवं छात्राओं के एन0ई0पी0 2020 के क्रियान्वयन में सार्थक अन्तर नहीं है।
2. महाविद्यालय स्तर पर अध्ययनरत् ग्रामीण एवं शहरी विद्यार्थियों के एन0ई0पी0 2020 के क्रियान्वयन में सार्थक अन्तर नहीं है।

8.0आंकड़ा संग्रहण के उपकरण

प्रस्तुत लघु शोध हेतु आंकड़ों के संकलन के लिए मुरादाबाद मण्डल के महाविद्यालय स्तर पर अध्ययनरत् विद्यार्थियों से व्यक्तिगत सम्पर्क करके प्रश्नावली के माध्यम से आंकड़ों का संकलन किया गया।

9.0न्यादर्श :–

वर्तमान शोधपत्र हेतु मुरादाबाद मण्डल के महाविद्यालय स्तर पर अध्ययनरत् 100 विद्यार्थियों को शामिल किया गया है।

10.0 उपकरण :–

क्रियान्वयन हेतु परीक्षण – स्वनिर्मित प्रश्नावली।

11.0 परिकल्पनाओं का विश्लेषण एवं व्याख्या :–

तालिका संख्या – 1

महाविद्यालय स्तर पर अध्ययनरत् छात्रों एवं छात्राओं के एन0ई0पी0 2020 के क्रियान्वयन का मध्यमान, मानक विचलन एवं क्रान्तिक अनुपात का विश्लेषण एवं व्याख्या

समूह	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	क्रान्तिक अनुपात	सार्थकता स्तर
छात्र	50	54.53	14.12	1.40	0.05 = 1.96 0.01 = 2.59
छात्राऐं	50	52.60	13.64		

0.01*सार्थक 0.05**सार्थक, ***सार्थक नहीं

व्याख्या :–

तालिका संख्या 1 में महाविद्यालय स्तर पर अध्ययनरत् छात्रों एवं छात्राओं के एन0ई0पी0 2020 के क्रियान्वयन को दर्शाया गया है। तालिका में महाविद्यालय

स्तर पर अध्ययनरत् छात्रों का मध्यमान, मानक विचलन 54.53 एवं 14.12 प्राप्त हुआ है जबकि महाविद्यालय स्तर पर अध्ययनरत् छात्राओं का मध्यमान, मानक विचलन क्रमशः 52.60 एवं 13.64 प्राप्त हुआ है। दोनो समूहों के मध्य क्रन्तिक अनुपात का मान 1.14 प्राप्त हुआ है। प्राप्त क्रान्तिक अनुपात सार्थकता के दोनों स्तर (0.01 एवं 0.05) से कम है। कम सार्थकता स्तर दोनों समूहों के मध्य सार्थक अन्तर को स्पष्ट नहीं करता है। इससे सिद्ध होता है कि महाविद्यालय स्तर पर अध्ययनरत् छात्रों एवं छात्राओं के एन0ई0पी0 2020 के क्रियान्वयन में सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता है।

तालिका संख्या – 2

महाविद्यालय स्तर पर अध्ययनरत् ग्रामीण एवं शहरी विद्यार्थियों के एन0ई0पी0 2020 के क्रियान्वयन का मध्यमान, मानक विचलन एवं क्रान्तिक अनुपात का विश्लेषण एवं व्याख्या

समूह	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	क्रान्तिक अनुपात	सार्थकता स्तर
ग्रामीण विद्यार्थी	50	56.55	14.38	1.45	0.05 = 1.96 0.01 = 2.59
शहरी विद्यार्थी	50	52.65	12.27		

0.01*सार्थक 0.05**सार्थक, ***सार्थक नहीं

व्याख्या :–

तालिका संख्या 2 में महाविद्यालय स्तर पर अध्ययनरत् ग्रामीण एवं शहरी विद्यार्थियों के एन0ई0पी0 2020 के क्रियान्वयन को दर्शाया गया है। तालिका में महाविद्यालय स्तर पर अध्ययनरत् ग्रामीण विद्यार्थियों का मध्यमान, मानक विचलन 56.55 एवं 14.38 प्राप्त हुआ है जबकि महाविद्यालय स्तर पर अध्ययनरत् शहरी विद्यार्थियों का मध्यमान, मानक विचलन क्रमशः 52.65 एवं 12.27 प्राप्त हुआ है। दोनो समूहों के मध्य क्रन्तिक अनुपात का मान 1.45 प्राप्त हुआ है। प्राप्त क्रान्तिक अनुपात सार्थकता के दोनों स्तर (0.01 एवं 0.05) से कम है। कम सार्थकता स्तर

दोनों समूहों के मध्य सार्थक अन्तर को स्पष्ट नहीं करता है। इससे सिद्ध होता है कि महाविद्यालय स्तर पर अध्ययनरत् ग्रामीण एवं शहरी विद्यार्थियों के एन0ई0पी0 2020 के क्रियान्वयन में सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता है।

12.0 निष्कर्ष

- महाविद्यालय स्तर पर अध्ययनरत् छात्रों एवं छात्राओं के एन0ई0पी0 2020 के क्रियान्वयन में सार्थक अन्तर नहीं पाया गया।
- महाविद्यालय स्तर पर अध्ययनरत् ग्रामीण एवं शहरी विद्यार्थियों के एन0ई0पी0 2020 के क्रियान्वयन में सार्थक अन्तर नहीं पाया गया।

➢ सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

प्रेम परिहार (2020) : नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 सम्भावनाएँ एवं चुनौतिया, शोध पत्र, IJAR 2020; 6(9): 109-111.

पाठक (2021) : राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के महत्वपूर्ण प्रावधानरू एक अध्ययन, शोध पत्र, Journal of Advances and Scholarly Researches in Allied Education [JASRAE] (Vol:18/ Issue: 6).

बिरेंद्र सिंह एवं कुकन देवी (2022) : उच्च शिक्षा के विशेष संदर्भ में राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 की एक महत्वपूर्ण अंतर्दृष्टि, शोध पत्र, IJRAR January 2022, Volume 9, Issue 1.

प्रकाश कुमार, 21वीं सदी की मांग पूरी करेगी नई शिक्षा नीति, आउटलुक हिंदी, 24 अगस्त 2020.

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020,मानव संसाधन विकास मंत्रालय, भारत सरकार।